विचार बिन्दु

दोष निकालना सुगम है, उसे अच्छा करना कठिन। –प्लूटार्क

अपने डेटा को लेकर अधिक जागरुक और सतर्क होने की ज़रूरत

बहुचर्चित किताब **सेपियन्स** के लेखक, विश्व इतिहास के विशेषज्ञ और हिब्रू विश्वविद्यालय, यरूशलम के प्राध्यापक युवालनोआहरारी ने अपनी किताब **21वीं सदी के लिए 21 सबक** में एक बहुत महत्वपूर्ण बात लिखी है:– ''वर्तमान में लोग नि:शुल्क ई मेल सेवाओं और हास्यास्पद कैट वीडियो के बदले अपनी सबसे मूल्यवान परिसंपत्ति –अपने निजी डेटा– सौंपा कर खुश होते हैं। यह कुछ–कुछ अफ्रीका और अमरीका के मूल निवासी कबीलों के जैसी स्थिति है, जिन्होंने अनजाने में रंगीन मनकों और सस्ते आभूषणों के बदले में अपने पूरे–के–पूरे मुल्कों को यूरोप के साम्राज्य वादियों के हाथों बेच दिया था।''

यह उद्धरण पढ़कर भी अगर आप न चौंके हों तो कृपया एक प्रयोग करके देखें। प्रयोग यह कि इण्टरनेट पर आप किसी चीज़ की खोज कीजिए। मान लीजिए, आप एक दीवार घड़ी की खोज करते हैं। या आप शिमला के बारे में कुछ जानकारी लेने का प्रयास करते हैं। आप पाएंगे कि आपकी इस खोज के तुरंत बाद आप पर चारों तरफ से दीवार घड़ी या शिमला के होटलों, रेस्तराओं आदि के बारे में विज्ञापनों की बौछार होने लग जाती है। अगर आपने अब तक इस बात पर ध्यान नहीं दिया हो तो मेहरबानी करके मेरा अनुरोध मानें और ऐसा करके देखें। इसके बाद सोचें कि जो हो रहा है वह आकस्मिक है या सुनियोजित! और सोचते हुए युवालनोआहरारी के उपर्युक्त उद्धरण को भी ध्यान में रखें।

इसके बाद मेरा एक और अनुरोध स्वीकार करें। ज़रा यह सोचें कि जहां हर चीज़ की कीमत बढ़ती जा रही है, कितना कुछ है जो आपको नि:शुल्क मिल रहा है! आप तमाम सोशल मीडिया का आनंद मुफ़्त में लेते हैं। फ़ेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और ऐसी न जाने कितनी सेवाएं आपको बिना एक भी पैसा खर्च किए सुलभ हैं! और यही क्यों, आप जो ई मेल भेजते–पाते हैं, वह भी तो नि:शुल्क है! आप इन सेवाओं का उपयोग करने के लिए इण्टरनेट सेवाओं पर जो खर्चा करते हैं, उसे इन सेवाओं पर किया जाने वाला खर्च न मानें। वह अलग खर्चा है।

क्या हम कलयुग से निकल कर सतयुग में पहुंच गए हैं कि महादानी अपनी सारी सेवाएं हमें नि:शुल्क उपलब्ध करा कर धन्य हो रहे हैं? या बात कुछ और है! यहीं ज़रा ठहर कर अंग्रेज़ी के उस बहु उद्धृत कथन को भी याद कर लीजिए जिसका काम चलाऊ हिंदी अनुवाद यह होगा कि दुनिया में मुफ्त लंच जैसी कोई चीज़ नहीं होती है। बात बहुत साफ़ है। जिन चीज़ों को हम मुफ़्त की समझ कर खुश होते हैं, असल में वे हमें मुफ़्त में नहीं दी जा रही हैं। उनके बदले में हमसे कुछ, बल्कि काफी कुछ वसूल किया जा रहा है, और इस बात से हममें से ज़्यादातर लोग अनजान हैं।

हक़ीक़त यह है कि इन तथाकथित मुफ़्त सेवाओं के बदले गूगल और फ़ेसबुक जैसी बड़ी कंपनियां, और उन जैसी अन्य अनेक कंपनियां हमारे पल–प्रतिपल के व्यवहार को ट्रैक करती हैं, हमारा डेटा संग्रहित करती हैं, उस डेटा को विभिन्न संस्थानों को बहुत बड़ी राशि लेकर बेचती हैं और वे संस्थान उस डेटा का न जाने कैसा–कैसा उपयोग करके हमें अपनी उंगलियों के इशारों पर नचाते हैं। उनके उपयोग का एक रूप तो यही टारगेटेड विज्ञापन हैं जिनका ज़िक्र मैंने अभी थोड़ी देर पहले दीवार घड़ी और शिमला के उदाहरण से किया था। हमारे व्यवहार को ट्रैक करके हमें वे विज्ञापन दिखाए गए जो हमारी ज़रूरतों से मेल खाते थे। यह तो बस, इस संग्रहित डेटा का एक छोटा–सा उपयोग है। हाल में किए गए एक अध्ययन से यह बात सामने आई है कि यूरोप में लोग इण्टरनेट पर क्या देखते हैं, इससे जुड़ा डेटा दिन भर में 376 बार और अमरीकी लोग क्या देखते हैं उससे जुड़ा डेटा दिन में 747 बार साझा किया जाता है। इस लेख के प्रारम्भ में मैंने युवालनोआहरारी का जो उद्धरण दिया है वह इसी बात की तरफ इशारा करता है।

''जैसे-जैसे डेटा आपके शरीर और मस्तिष्क के बायोमैट्रिक सेंसर के रास्ते प्रवाहित होकर बुद्धिमान मशीनों तक पहुंचते जाएंगे, वैसे-वैसे व्यापारिक प्रतिष्ठानों और सरकारी एजेंसियों के लिए आपको जानना, आपको मनमाने ढंग से परिचालित करना और आपकी ओर से फैसले लेना आसान होता जाएगा।''

ज़रा यह भी जान लें कि आपका डेटा किस तरह आपसे पूछ कर प्राप्त किया जाता है। जब भी आप किसी नए एप को या किसी नई वेबसाइट को इस्तेमाल करना शुरू करते हैं, आपसे कुछ अनुमतियां ली जाती हैं और आप बेधड़क मैं सहमत हूं कहकर वे अनुमतियां दे देते हैं। मैं नहीं जानता कि हममें से कितने लोग हैं जो यह समझने के बाद कि हमसे किस बात की अनुमति ली जाती है, वह अनुमति देते हैं। बीबीसी की शोध टीम ने कुछ बहुत लोकप्रिय एप्स और वेबसाइट्स का अध्ययन करके बताया है कि आम तौर पर ये अनुमतियां तीन तरह की होती हैं:– पहली लोकेशन ट्रैकिंग, दूसरी सहयोगी कंपनियों को डेटा देना और तीसरी आपने डेटा को थर्ड पार्टीज़ के साथ साझा करना। यहीं यह भी जान लेना उपयोगी होगा कि अगर आपके मोबाइल में कोई एप, जैसे फ़ेसबुक, है और आपने उसमें लॉग इन नहीं कर रखा है, या यहां तक कि उसमें अपना अकाउण्ट ही नहीं बना रखा है तो भी फ़ेसबुक आपका फ़ोन ट्रैक कर सकता है। यह जानकारी स्वयं फ़ेसबुक ने अपनी डेटा पॉलिसी में दी है।

अब यहां दो बड़े मुद्दे सामने आते हैं। एक तो यह कि यह तकनीक हमारी निजता में, अलबत्ता हमारी अनुमति से, घुसपैठ करती है। दूसरा यह कि इस तरह घुसपैठ करके प्राप्त किए गए डेटा से बहुत लोगों की रोजी–रोटी चलती है। और तीसरा जो सबसे बड़ा मुद्दा है वह यह कि इस तरह प्राप्त किए गए डेटा से हमें नियंत्रित करने की सम्भावनाओं से मना नहीं किया जा सकता। इसी बात को लक्ष्य करके युवालनोआहरारी ने अपनी उक्त किताब में लिखा है कि ''जैसे जैसे डेटा आपके शरीर और मस्तिष्क के बायोमैट्रिक सेंसर के रास्ते प्रवाहित होकर बुद्धिमान मशीनों तक पहुंचते जाएंगे, वैसे–वैसे व्यापारिक प्रतिष्ठानों और सरकारी एजेंसियों के लिए आपको जानना, आपको मनमाने ढंग से परिचालित करना और आपकी ओर से फैसले लेना आसान होता जाएगा।''

इन सारी बातों से एक आधारभूत सवाल उपजता है। बकौल हरारी, ''मूल प्रश्न यह है: डेटा का स्वामित्व किसके हाथ में है? क्या मेरे डीएनए, मेरे मस्तिष्क और मेरे जीवन से संबंधित डेटा पर मालिकाना हक़ मेरा है, सरकार का है, किसी व्यापारिक निगम का है, या मानव–समूह का है?''

और शायद इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया है कनाडा की एक ट्रैक कंपनी सर्फ़ ने। इस कम्पनी ने हाल में सर्फ़ नाम से ही एक ब्राउज़र एक्स्टेंशन लॉंच किया है। यह ब्राउज़र एक्स्टेंशन एक तरह से गूगल को चकमा देकर, उसे बाइ पास करके अपना काम करता है। सर्फ़ का वादा है कि आप अपने डेटा के ख़ुद मालिक हैं और आपको हक़ है कि आप उसे जिसे चाहे बेचें, या न बेचें। सर्फ हालांकि अभी अपने अस्तित्व के शुरुआती दौर में है और अभी यह अमरीका और कनाडा में बहुत सीमित रूप में ही उपलब्ध है, फिर भी इसका दावा है कि यह अपने उपयोग कर्ताओं को कुल मिलाकर 1.2 मिलियन डॉलर कमाने का मौका देगा। कंपनी का कहना है कि विभिन्न ब्राण्ड्स उसके उपयोग कर्ताओं का डेटा इस्तेमाल कर सकेंगे और इसके बदले में वे ब्राण्ड्स उन उपयोग कर्ताओं को धनराशि अदा करेंगे। यहां जो बात ग़ौर तलब है वह यह कि सर्फ़ अपने उपयोग कर्ताओं को यह विकल्प देता है कि वे अपना डेटा साझा करें या न करें, जबकि अभी अन्यत्र हमें यह सुविधा सुलभ नहीं है। सर्फ़ की यह पहल उस निरंतर बड़े होते जा रहे अभियान का हिस्सा है जिसे ज़िम्मेदार तकनीक के नाम से जाना जाता है। इस तकनीक का मकसद लोगों को उनके डेटा पर और ज़्यादा नियंत्रण प्रदान करना है। कनाडा की एक और स्टार्टअप कंपनी जिसका नाम बेवरली है वह भी ऐसा ही कर रही है। यह कंपनी लोगों को गूगल न्यूज़ और एपल न्यूज़ से हटकर अपना न्यूज़फ़ीड हासिल करने की सुविधा देती है। इसी तरह एक अमरीकी कंपनी अबाइन अपने दो एप्सब्लर और डिलीट के माध्यम से आपको आश्वस्ति देती है कि आपके पासवर्ड और भुगतान ब्यौरों को ट्रैक नहीं किया जाएगा तथा आप सर्च इंजन से अपने निजी डेटा को मिटा सकेंगे। इस कंपनी अबाइन के मालिक रॉबशैवेल का सोच यह है कि इण्टरनेट पर कुछ भी सर्फ करने में स्वत: प्राइवेसी सुनिश्चित होनी चाहिए।

हमारे डेटा की निजता और सुरक्षा के बारे में जैसे–जैसे जागरूकता बढ़ती जा रही है, इनसे मोटा लाभ कमाने वाली कंपनियां भी इस दिशा में अधिक ज़िम्मेदार होने का एहसास दिलाने लगी हैं। हाल में गूगल के एक प्रवक्ता का बयान सामने आया है जिसमें वे कहते हैं कि ''इस साल के अंत में, हम माईएडसेण्टर लॉंच करेंगे, जो हमारे प्राइवेसी कंट्रोल को बढ़ाएगा ताकि लोगों को जो विज्ञापन दिखाए जाते हैं, उन्हें वे लोग और ज़्यादा नियंत्रित कर सकें।''

जब तक सब कुछ आदर्श नहीं हो जाता, हमें अपने डेटा को लेकर और अधिक जागरूक और सतर्क होना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

(26 जून - शाहूजी महाराज जयंती विशेष)

सामाजिक लोकतंत्र के आधार स्तंभ थे छत्रपति शाहूजी महाराज

छत्रपती शाहूजी महाराज एक ऐसे मातृहृदयी राजा थे जिन्होंने मनुवादी व्यवस्था से पीड़ित पिछड़े समाज को अपनी संतान के रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने पिछड़े समाज के दु:ख–दर्द तथा जरूरतों को समझते हुए निवारण करने का बीड़ा उठाया था। इसलिए डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने उन्हें सामाजिक लोकतंत्र का आधार स्तम्भ कहा था। बाबा साहब कहते थे कि शाहूजी महाराज का जन्मदिवस त्यौहार के रूप में मनाना चाहिए।

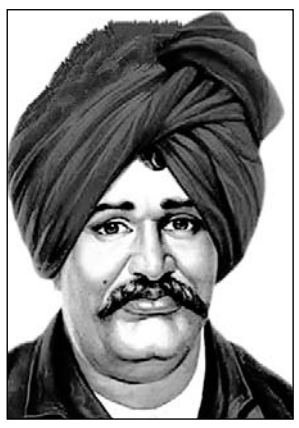

छत्रपति शाहूजी महाराज

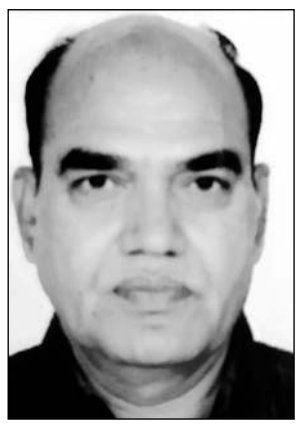

पन्नालाल मेघवाल

बाबा साहब अम्बेडकर से उनके भावनात्मक सम्बन्ध थे। वे बाबा साहब के सबसे बड़े हितैषी और सहयोगी थे। उन्होंने बाबा साहब अम्बेडकर को पिछड़ों के लिए उनका अपना हितैषी नेता घोषित किया था।

छत्रपति शाहूजी महाराष्ट्र राज्य की कोल्हापुर रियासत के राजा थे। ये शूद्र कुर्मी जाति से थे। उन्होंने मूल निवासियों–शूद्रों एवं अतिशूद्रों के लिए शिक्षा के दरवाजे खोले थे, जिससे उन्हें मुक्ति की राह दिखाने में उनका बहुत बड़ा योगदान था।

छत्रपति शाहूजी महाराज का जन्म 26 जून 1874 को कोल्हापुर में हुआ था। उनके पिताजी का नाम श्रीमंत जयसिंह राव आबा साहब घाटगे तथा माताजी का नाम राधाबाई साहिबा था। छत्रपति शाहूजी के जन्म का नाम यशवंतराव था। आबा साहब यशवंतराव के दादा थे। चौथे शिवाजी का अंत होने के बाद शिवाजी महाराज की पत्नी महारानी आनंदीबाई साहिबा ने 1884 में यशवंत राव को गोद लिया था। इसके बाद यशवंतराव का नाम शाहू छत्रपति रखा गया। उन्हें कोल्हापुर रियासत का वारिस बनाया गया था।

छत्रपति शाहू महाराज की शिक्षा राजकोट स्थित राजकुमार महाविद्यालय में हुई। राजकोट की शिक्षा समाप्त करके शाहूजी को आगे की शिक्षा पाने के लिए 1890 से 1894 तक धारावाड़ में रखा गया। छत्रपति शाहू महाराज ने अंग्रेजी, इतिहास और राज्य कारोबार चलाने की शिक्षा ग्रहण की। अप्रैल, 1897 में राजा शाहू का विवाह खानविलकर की कन्या श्रीमंत लक्ष्मीबाई से संपन्न हुआ। विवाह के समय लक्ष्मीबाई की उम्र महज 11 वर्ष की थी।

जब छत्रपति शाहूजी महाराज की आयु 20 वर्ष थी तब उन्होंने कोल्हापुर रियासत के अधिकार ग्रहण करके सत्ता की बागड़ोर अपने हाथ मेली तथा शासन करने लगे। कहा जाता है कि जब 1894 में इनका राज्यभिषेक समारोह हुआ तो उनके शूद्र होने की वजह से हिन्दू धर्म के अनुसार ब्राह्मणों ने पैर के अँगूठे से उनका राजतिलक किया, इससे उन्हें अत्यधिक दु:ख एवं पीड़ा हुई।

आमतौर पर सभी राजाओं की छवि जनता की आमदनी को कर के माध्यम से हड़पने एवं जबरन वसूली की थी, लेकिन छत्रपति शाहूजी ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने सबसे बड़ा काम राज व्यवस्था में परिवर्तन करके किया। उनका मानना था कि संस्थान की वृद्धि में उन्नति के लिए प्रशासन में हर जाति के लोगों की सहभागिता जरूरी है। उस समय उनके प्रशासन में ज्यादातर ब्राह्मण जाति के अधिकारी थे, बहुजन समाज के मात्र 11 अधिकारी थे। ब्राह्मणों ने एक चाल के तहत बहुजन समाज को शिक्षा से दूर रखा था, ताकि पढ़–लिखकर ये सरकार में शामिल न हो सकें। छत्रपति शाहूजी इस बात से चिंतित रहते थे। उन्होंने प्रशासन में ब्राह्मणों के इस एकाधिकार को समाप्त करने के लिए बहुजन समाज की भागीदारी के लिए आरक्षण कानून बनाया।

छत्रपति शाहूजी महाराज ने राजा बनते ही 28 साल की उम्र में 1902 में वंचितों के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था लागू की। यह सामाजिक न्याय की दिशा में पहला बहुत बड़ा क़दम था कानून के अंतर्गत बहुजन समाज के लिए आरक्षण व्यवस्था लागू करना क्रांतिकारी पहल थी। जो देश में आरक्षण की यह पहली व्यवस्था थी। तब तक बहुजन समाज के लिए शिक्षा के दरवाजे बंद थे, उन्हें तिरस्कार की जिंदगी जीने के लिए मजबूर किया जाता था।

गंगाधर काम्बले जो कि अछूत जाति के थे, उनकी चाय की दुकान खुलवा कर स्वयं महाराज चाय पीने जाते थे ताकि जाति प्रथा और ऊंच–नीच को जड़ से मिटाया जा सके। इसलिए उन्हें सबसे बड़ा समाज सुधारक भी माना जाता है। उनका कहना था कि कल न मैं होंऊगा, न आप होंगे, न राजा होंगे, न रजवाड़े होंगे। मगर यह राष्ट्र हमेशा रहेगा और हमें इसको आगे बढ़ाने का काम करते रहना है। समाज में सबको सम्मान मिले, सभी शिक्षित होकर राष्ट्र के उत्थान में भागीदार बनें, तभी हमारा जीवन सफल माना जायेगा।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

भयमुक्त, यौनातुर, बेशर्म विस्मृति–क्लूवर बूसी सिन्ड्रॉम

अत्यंत विचित्र और विलक्षण विस्मृति की स्थिति होती है क्लूवर–बूसी सिन्ड्रोम (Kluver-Bucy Syndrome) में।

एक व्यक्ति को मस्तिष्क का वायरल इनफेक्शन हुआ। हर्पीज वायरस से, जो नाक में ओल्फैक्टरी नर्व से मस्तिष्क में पहुँचा था। व्यक्ति इलाज से ठीक तो हो गया लेकिन उसके स्वभाव में अजीब परिवर्तन आ गया। स्वभाव से बड़ा सीधा हो गया। आचरण में अजीब परिवर्तन। हर चीज को मुँह में लेना, चखना और ऐसा बार–बार करना, उसी चीज को लेकर करना। अजीब खब्त। इससे भी बदतर भावशून्य अश्लील यौन आतुरता। शील–अश्लील का भाव खत्म। जाँच से उजागर हुआ कि ऐसा मस्तिष्क के टेम्पोरल लोब में संक्रमण जनित क्षति के कारण हुआ। मस्तिष्क के इस भाग की विशेष क्षति का कारण, नाक से आने वाली नर्व जिससे वायरस आये थे, यहीं पहुँचती है। मस्तिष्क की टी बी या अन्य कारणों से जिस रोगी में दोनों साइड के टेम्पोरल लोब में क्षति हुई, उनमें कमोबेश ऐसे ही स्वभाव व यौन आचरण सम्बन्धी लक्षण मिलते हैं। इसे क्लूवर बूसी सिंड्रोम के नाम से जाना जाता है।

सन् 1930 में क्लूवर और बूसी नाम के दो डॉक्टरों ने बन्दरों में मस्तिष्क के टेम्पोरल लोब को शल्य क्रिया कर हटा दिया। इसके बाद बन्दरों के स्वभाव और व्यवहार में विलक्षण बदलाव देखा गया। मस्तिष्क के इस भाग में ऐमिग्डेलॉइड केन्द्रक (न्यूक्लियस), लिम्बिक सिस्टम का एक प्रमुख भाग, स्थित होता है। प्रयोग के तौर पर जब बन्दर में इसे क्षतिग्रस्त किया गया तो बन्दर भयमुक्त हो गया (साँप से डरा नहीं), क्रोध विहीन हो गया (कितना भी छेड़ने पर उद्वेलित नहीं हुआ) उसकी तात्कालिक स्मृति लुप्त हो गई (दी गई वस्तु को हाथ से उठाया,

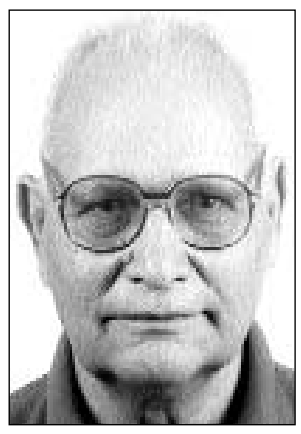

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

देखा, मुँह मे रख चखा और बेस्वाद पाकर फेंक दी। लेकिन तुरन्त ही उसे फिर उठाया, देखा, चखा और फेंका और ऐसा बार–बार करता रहा।) नई अनुभूति की याद ही नहीं रहती, स्मृति नहीं बनती। (Antegrade amnesia) और वह कामान्ध होकर आक्रामक और असंयमित लेकिन सर्वथा भावशून्य यौन क्रिया के लिए प्रवृत्त हो गया।

मस्तिष्क के इस भाग के क्षति लक्षण थे –

1. विस्मृति – न नये अनुभवों की स्मृति बनी, न पुरानी स्मृति को बचाए रखने की क्षमता रही।
2. भय मुक्त, आक्रामकता खत्म, किसी बात से क्रोध नहीं आता (Docility)
3. हर चीज को मुँह में रखना, चख कर देखना (Hyperorality)
4. अत्यधिक कामोत्तेजना, कामातुरता, असंयमित व अस्वाभाविक काम प्रवृति, – नर, मादा, पशु या वस्तु के साथ – कामांधता (Hypersexuality) देखकर किसी चीज को पहचानने की क्षमता खत्म (Visual agnosia)

मनुष्य में भी जब ऐमिग्डेलॉइड केन्द्रक और उसके निकटस्थ भागों को नष्ट किया गया (आवश्यक शल्य क्रिया द्वारा) या वे स्वत: रोग से क्षतिग्रस्त हो नष्ट हुए तो वह भयमुक्त, क्रोधविहीन और आक्रामक यौनक्रिया प्रवृत और भावशून्य हो गया। उसकी तत्कालीन स्मृति लोप हो गयी। भय, क्रोध और यौन क्रिया नियन्त्रक केन्द्रक के नष्ट होने से क्लूवर–बूसी सिंड्रोम के विलक्षण लक्षण व्यक्त हुए।

एक समय था जब भयंकर रूप से उग्र और आक्रामक पागलों में मस्तिष्क के अग्र भाग का फ्रंटल लोबेक्टोमी आपरेशन किया जाता था। पागल, जिसे काबू करना असंभव होता था, आपरेशन के बाद गाय सा सीधा मोम की मूरत बन जाता था।

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

फर्जी दस्तावेज से गरीब दलित महिलाओं की लाखों की भूमि हड़पी

मामला दर्ज होने के बाद नामान्तरण के निर्णय को रोकने के निर्देश

मांडलगढ़, (निसं)। उपखंड क्षेत्र मालका खेडा में तीन वृद्ध दलित महिलाओं के साथ खेती की जमीन से धोखाधड़ी करने का मामला सामने आया हैं। इन बेबस महिलाओं को अपनी आजीविका की जमीन हड़पने की खबर मिली तो पैरों तले जमीन खिसक गई और रोने बिलखने लगी। इस मामले में तीनों महिलाओं ने आरोपी गिरोह के खिलाफ काछोला थाने में मामला दर्ज कराया हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही हैं। मांडलगढ़ के मालका खेड़ा पंचायत के भट खेड़ी गांव की रहने वाली एक ही परिवार की तीन पीडित महिलाएं हैं।

जिसमे 80 साल की विधवा बरजी देवी पत्नी भूराभील, राजी देवी पत्नी कल्याण भील 75 साल और पानी देवी पत्नी देबीलाल भील 36 साल की हैं। इन तीनों महिलाओं के खेती की जमीन में बरजी देवी की आराजी नम्बर 3–4–5–6/2 रकबा 2.6385 हेक्टेयर, राजिदेवी की आराजी नम्बर 236/164 रकबा 0.8094 हेक्टेयर, व पानी देवी की आराजी नम्बर 235/164 0.8094 हेक्टेयर की लाखों की कीमत भूमि को भूमाफिया गिरोह ने तथाकथित महिलाओं की आड में फर्जी दस्तावेज तैयार कर तहसील कार्यालय काछोला से फर्जी रजिस्ट्री करा अपने नाम करा ली ओर पटवारी ने तत्काल नामांतरण भी राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज कर लिया।

मांडलगढ़ के मालका खेड़ा पटवार मण्डल में तीन बुजुर्ग दलित महिलाओं की खेती की जमीन को फर्जी तरीके से भूमाफिया ने हड़प लिया।

इस पूरे खेल में भूमाफिया गिरोह के साथ मालका खेड़ा के पटवारी बाबूलाल मीणा, एक वकील परमेश्वर धाकड़ की संदिग्ध भूमिका सामने आई हैं। मामले में पीड़ित महिलाओं ने भूमि खरीददार जसवीर पिता किशोर मीणा निवासी श्रीनगर तहसील बूंदी, हरनाथ पिता सुरजा मीणा निवासी लक्ष्मीपुरा तहसील मांडलगढ़ तथा भूमि विक्रय करने वाली कथित महिलाओं में बरजी देवी भील, राजी देवी भील, पानी देवी भील व रजिस्ट्री में गवाह बने आधा दर्जन भूमाफिया गिरोह के सदस्यों के खिलाफ थाने में मामला दर्ज किया गया हैं।

गौरतलब है कि पानीदेवी की रजिस्ट्री में तो इसकी माता बरजी देवी की उम्र 40 साल, वहीं बेटी पानी देवी की उम्र 53 साल अंकित मिली हैं। यानी माता की उम्र से बेटी 13 साल अधिक हैं। इन पीड़ित महिलाओं की खेती की जमीन छिन जाने पर तीनों महिलाएं पुलिस थाने में फरियाद लेकर न्याय की गुहार लगा रही हैं।

■ **इस पूरे खेल में भूमाफिया गिरोह के साथ मालका खेड़ा के पटवारी, एक वकील की संदिग्ध भूमिका सामने आई है**

मांडलगढ पुलिस उप अधीक्षक ज्ञानेन्द्र सिंह ने बताया कि तीनों महिलाओं के साथ जमीन की हुई धोखाधडी का मामला काछोला थाने में दर्ज कर अनुसन्धान शुरू किया गया हैं। जांच में दोषी पाए जाने पर प्रकरण में लिप्त आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी होगी। मांडलगढ़ तहसीलदार नारायण प्रसाद शर्मा ने बताया कि मालका खेडा पटवार मंडल में तीन महिलाओं की खेती की भूमि को कूटरचित दस्तावेज से अन्य महिलाओं ने फर्जी रजिस्ट्री से बेचने की शिकायत मिली हैं। भूमि को फर्जी तरीके से बेचने के बाद नामान्तरण के निर्णय को रोकने के निर्देश पटवारी को दिए गए हैं और मामले की जांच की जा रही हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 27 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, रोहिणी नक्षत्र सांय 4:02 तक, शूल योग प्रात: 6:46 तक, विष्टि करण सांय 4:39 तक, चन्द्रमा मंगलवार प्रात: 5:33 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–वृष, मंगल–मीन, बुध–वृष, गुरू–मीन, शुक्र–वृष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। अमृत सिद्धि योग सांय 4:02 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा सांय 4:30 तक है। मंगल अश्विनी मेष में प्रात: 5:40 पर प्रवेश करेगा। आज मास शिवरात्रि, रोहिणी व्रत (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:22 तक, शुभ 9:04 से 10:47 तक, चर 2:12 से 3:55 तक। लाभ–अमृत 3:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:20

मेष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक अड़चने अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में ऊचित सफलता मिलेगी।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से मनोबल बढ़ेगा और आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।